दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273009
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2019–20 दिनांक 08.05.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

धर्म और विज्ञान एक दूसरे के प्रतिपूरक हैं– डॉ विवेक निगम

गोरखपुर 8 मई 2020। समाज के सुचारू रूप से संचालन के लिए धर्म अति आवश्यक है। जब हम धर्म को अपने जीवन में उतारते हैं तो अपनी परंपरा के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है। पश्चिम की वैचारिकी का मानना है कि पूरी सृष्टि मनुष्य के उपभोग के लिए है परंतु यदि सभी लोग सृष्टि के उपभोग के लिए प्रयास करेंगे तो उनमें संघर्ष अवश्य ही उत्पन्न होगा। पश्चिमी विचारक कॉल मार्क्स को लगा कि धर्म सामान्य जन के विपरीत है इसीलिए उन्होंने धर्म को अफीम के समान बताया जबकि वास्तविकता यह है कि उन्होंने धर्म के विषय में जो समझा वह वास्तव में पंथ है। समाज में क्रिश्चियनिटी अपने तत्वज्ञान के आधार पर नहीं बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था के आधार पर आगे बढ़ रहा है। पंथ में कट्टरता होती है जबकि धर्म हमें सहिष्णु बनाता है।''

उक्त विचार ''दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में दिग्विजय नाथ जी महाराज के जयंती सप्ताह समारोह के दूसरे दिन फेसबुक लाइव के माध्यम से धर्म और विज्ञान विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ विवेक निगम एसोसिएट प्रोफेसर यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज प्रयागराज ने हिंदू समाज व हिंदू धर्म की रक्षा में अपना सर्वस्व लगाने वाले पूज्य संत दिग्विजय नाथ जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रखा।

उन्होने आगे कहा कि अपने कुछ विशिष्ट गुण के नाते हैं धर्म की भूमिका बार–बार बदलती है .जो धारणीय है उसको धारण करना ही हमारा धर्म है। पूजा पद्धति के कर्मकांडों में कई सारे ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें वैज्ञानिक कसौटी पर कसना संभव नहीं है और ये सभी विज्ञानसम्मत भी नहीं है इनमें से कुछ भावना केंद्रित तो कुछ अर्थ केंद्रित भी हैं। साथ ही साथ प्रत्येक बात की वैज्ञानिक व्याख्या देने की कोशिश करना भी उचित नहीं है। यदि हमारा कोई कर्म दूसरे व्यक्ति को कष्ट पहुंचाता है तो वह निश्चित रूप से त्याज्य है। हमारी भारतीय संस्कृति में ऋषियों ने कहा है कि सत्य बोलो परंतु जो सत्य कष्ट पहुंचा रहा है ऐसा सत्य कदापि मत बोलो। यज्ञ करने से प्रकृति शुद्ध होती है इस पर बार–बार तर्क–वितर्क होते रहे हैं। परंतु आज के इस वैज्ञानिक युग में यज्ञ करने से प्रकृति की शुद्धता को प्रमाणित किया गया है

पीपल की पूजा करने के प्रति हमारी आस्था रही है वृक्ष हमारे पर्यावरण की रक्षा करते हैं यह सारी दुनिया को आज समझ में आ रही है, धर्म सर्वकालिक है, परंपराएं काल बाधित होती है उन्हें बिना किसी मोह के छोड़ देनी चाहिए, न्यूटन आदि जैसे वैज्ञानिक भी गहरे धार्मिक आस्था वाले रहे हैं.धर्म और विज्ञान पर चिंतन करने से यह स्पष्ट होता है की धर्म और विज्ञान एक दूसरे के प्रति पूरक रहे हैं इस पर कोई संदेह नहीं है ।

आज के इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर शैलेंद्र प्रताप सिंह डॉक्टर राजशरण शाही, डॉ. अमरनाथ तिवारी, श्री पवन कुमार पाण्डेय सहित महाविद्यालय के सभी शिक्षकगण, विद्यार्थी एवं तमाम सारे बौद्धिक लोग इस व्याख्यान से फेसबुक लाइव के माध्यम से जुड़े रहें।

दिनांक 09.05.2020, अपराह्न 01.00 बजे कोविड–19 एवं भूराजनीतिक प्रतिस्पर्धा'' विषय पर बनरास हिन्दू विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रो. टी.पी. सिंह जी फसेबुक लाइव के माध्यम से अपना व्याख्यान देंगे जिसे दिग्विनाथ स्नाताकोत्तर महाविद्यालय के फेसबुक पेज पर देखा जा सकता है।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी सूचना एवं जनसम्पर्क